गलतियां जीवन का हिस्सा है पर इन्हें स्वीकार करने का साहस कम लोगों में होता है।
– अज्ञात

चिंता की एक और वजह

ट्रंप खेमे की तमाम रोकटोक, मुकदमेबाजी और दोबारा गिनती के बावजूद यह रेखा वह आराम से पार कर गए। आम मतदाताओं के 7.4 करोड़ वोट बाइडन को मिले जो अमेरिका के इतिहास में सबसे ज्यादा है। बावजूद इसके, रूस ने अभी तक उनको बधाई नहीं दी है।

अनुप शाह।।

आखिर जोसफ बाइडन अमेरिका के 46वें राष्ट्रपति निर्वाचित हो गए। बहुमत के लिए उन्हें इलेक्टोरल कॉलेज के 270 वोटों की जरूरत थी। ट्रंप खेमे की तमाम रोकटोक, मुकदमेबाजी और दोबारा गिनती के बावजूद यह रेखा वह आराम से पार कर गए। आम मतदाताओं के 7.4 करोड़ वोट बाइडन को मिले जो अमेरिका के इतिहास में सबसे ज्यादा है। बावजूद इसके, रूस ने अभी तक उनको बधाई नहीं दी है। चीन ने भी यह कहते हुए बधाई देने में जल्दबाजी से बचना चाहा है कि नतीजे अभी स्पष्ट नहीं हुए हैं।

अमेरिका ही नहीं, दुनिया के लिए भी यह असमंजस आशंकाएं पैदा कर रहा है। यों भी ट्रंप का कार्यकाल उनकी कभी कुछ भी बोल या कर देने की छवि से आक्रांत रहा है। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि कोर्ट में चुनौती देने से चुनाव नतीजों पर कोई असर नहीं पड़ना है क्योंकि ट्रंप के आरोपों की पुष्टि करने वाला कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है।

फिर भी यह तो है कि इस बार अमेरिका में सत्ता हस्तांतरण की प्रक्रिया उतनी सहज नहीं रहने वाली, जितनी हर बार होती है। चिंता की एक और वजह यह है कि नियमतः ट्रंप दो महीने और राष्ट्रपति पद पर बने ही रहने वाले हैं। नए राष्ट्रपति का शपथग्रहण 20 जनवरी को होता है। जो सवाल सबके मन को मथ रहा है, वह यह कि इस बीच ट्रंप पता नहीं क्या फैसला करके आने वाली सरकार के लिए किस तरह की मुश्किल खड़ी कर दें। अंतरराष्ट्रीय मामलों में, खासकर चीन के संदर्भ में उनका कोई विवादित फैसला अगली सरकार की मुसीबत बढ़ा सकता है। हालांकि बाइडन के सामने चुनौतियां यों भी कम नहीं हैं। सबसे बड़ी चुनौती तो कोरोना महामारी से निपटने की ही है जो ट्रंप सरकार की गलत प्राथमिकताओं के चलते अमेरिका में बेकाबू हो गई है और कई देशों में उसकी दूसरी लहर चल पड़ी है। बीमारी के बजाय विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) को निशाना बनाने से न केवल कोरोना से लड़ाई कमजोर पड़ी, बल्कि दुनिया में अमेरिका की छवि को भी नुकसान पहुंचा। ऐसा ही नुकसान पेरिस जलवायु समझौते और अन्य अंतरराष्ट्रीय समझौतों से एकतरफा ढंग से बाहर आने से भी हुआ।

जाहिर है, बाइडन के नेतृत्व में बनने वाली सरकार को इन तमाम नुकसानों की भरपाई के लिए काफी मशक्कत करनी होगी। अर्थव्यवस्था की तबाह हालत इस काम को बेहद कठिन बना देती है, फिर भी यह सबसे बड़ी चुनौती नहीं है। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि साइंस–टेक्नॉलजी के मोर्चे पर अमेरिका की सर्वोच्चता खतरे में है। टेलिकॉम में 5जी में बढ़त बनाकर चीन ने लीड ले ली है।

इस मोर्चे पर अमेरिका की सबसे बड़ी ताकत यह रही है कि दुनिया भर की प्रतिभाएं वहां पहुंचकर उसे अपनी सेवाएं देने को तत्पर रही हैं। मगर पिछले कुछ वर्षों की संकीर्णता और एंटी माइग्रैंट फैसलों ने भारत जैसे तमाम देशों के स्टूडेंट्स के मन में अमेरिका के प्रति आशंकाएं पैदा की हैं। बाइडन प्रशासन को इन सारे मोर्चों पर बहुत मेहनत करनी होगी।

रणभूमि

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

भीम ने दुर्योधन की जंघा उतार दी थी। वह खून में लथपथ होकर रणभूमि पर गिरा हुआ था। बस, कुछ ही समय में दम तोड़ने वाला था लेकिन भूमि पर गिरे हुए ही उसने श्रीकृष्ण की ओर देखते हुए अपने हाथ की तीन अंगुलियों को बार–बार उठाकर कुछ बताने का प्रयास किया। पीड़ा के कारण उसके मुंह से आवाज धीमी धीमी ही निकल रही थी। ऐसे में श्रीकृष्ण उसके पास गए और कहने लगे कि क्या तुम कुछ कहना चाहते हो? तब उसने कहा कि उसने महाभारत के युद्ध के दौरान तीन गलतियां की हैं, इन्हीं गलतियों के कारण वह युद्ध नहीं जीत सका और उसका यह हाल हुआ है। यदि वह पहले ही इन गलतियों को पहचान लेता, तो आज जीत का ताज उसके सिर होता।

संपादकीय

पैरिस का अंधेरा

बेस्ट फिल्म का अवॉर्ड जीतने वाली बोस्निया की जस्मीला ज्बानिक की फिल्म 'क्वो वाडिस, आइडा?' हमें बोस्निया के युद्ध में ले जाती है, जब संयुक्त राष्ट्र की शांति सेना की निगरानी के बावजूद 1995 में स्रेब्रेनिका शहर में आठ हजार लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया था। फ्रांस के क्लाउस ड्रेक्जेल की विस्मयकारी फिल्म 'अंडर द स्टार्स आफ पेरिस' एक नया वृतांत रचती है। पेरिस की जानी–पहचानी रोमांस और रौशनी वाले शहर की छवि के विपरीत एक पेरिस शरणार्थियों और भिखारियों का भी है जो सड़कों पर जीते–मरते हैं। मोरक्को के इसराइल फारूखी की फिल्म 'मिका' में एक आठ साल का अनाथ बच्चा मजदूरी करके इतना पैसा कमा लेना चाहता है कि वह अवैध रूप से यूरोप भेजने वाले एजेंट की फीस दे सके। पुर्तगाल की अना रोचा डिसूजा की फिल्म 'लिसेन' लंदन में अवैध आप्रवासी परिवार की त्रासदियों की सच्ची कहानी है। लंदन के बाहरी इलाके में पुर्तगाल से आए जोटा और उसकी पत्नी बेला शरणार्थी का जीवन जी रहे हैं। उनके तीन बच्चों को सही देखभाल न करने के आरोप में सरकार के सामाजिक सेवा विभाग के अधिकारी उनसे छीन लेते हैं। अब पूरी फिल्म ब्रिटिश कानून की अमानवीय लाल फीता शाही का विवरण है। वहीं बुरकिना फासो की एक अवैध आप्रवासी महिला का आठ साल का बच्चा उससे बिछड़ जाता है। एक भिखारिन उसे शरण देती है और ठंड से कांपती हुई पूरी फिल्म पेरिस में उस बच्चे की मां की खोज में चलती है, जिसे पुलिस वापस डिपोर्ट करने वाली है।

इसकी वजह है फिल्मों की गुणवत्ता, मानवीय सरोकार, विचारों की आजादी और मार्केटिंग। बुशरा रोजा 2021 में अमिताभ बच्चन को सपरिवार आमंत्रित कर उनकी फिल्मों पर यहां एक विशेष कार्यक्रम करना चाहती हैं।

अमिताभ बच्चन का क्रेज

अजित राय।।

तुर्की के पत्रकार नीलूफर देमिर की खींची हुई मार्मिक तस्वीर ने मिस्र (इजिप्ट) के एक बड़े और पुराने ईसाई उद्योगपति समीह साविरिस और उनके भाई नागूब साविरिस को इतना विचलित कर दिया कि उन्होंने शरणार्थियों के लिए एक टापू खरीदने का मन बनाया। वह तस्वीर सीरिया के युद्ध से भागकर अपनी मां और भाई के साथ यूरोप के रास्ते कनाडा जाते हुए भूमध्य सागर में 2 सितंबर 2015 को डूब जाने वाले तीन साल के अलान कुर्दी नामक बच्चे की थी, जिसे तुर्की के ब्रोदुम समुद्र तट पर मृत पड़ा हुआ देखा गया था। दिल दहलाने वाली यह तस्वीर सोशल मीडिया में वायरल हुई थी। साविरिस बंधु किन्ही कारणों से टापू तो नहीं खरीद पाए, लेकिन 22 सितंबर 2017 को मिस्र की राजधानी काहिरा से 445 किलोमीटर दूर लाल सागर के किनारे बसाए गए अपने निजी शहर अल गूना में अरब दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण फिल्म फेस्टिवल जरूर शुरू कर दिया। उनका मानना था कि सिनेमा धीरे–धीरे अरब दुनिया को बदल देगा।

अरब सिनेमा में मिस्र के मोहम्मद दियाब की फिल्म '678' से मशहूर हुई अभिनेत्री बुशरा रोजा ने जब साविरिस बंधुओं को अल गूना फिल्म

फेस्टिवल का आइडिया दिया तो वे तुरंत मान गए। तब किसी को भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि महज चार साल में ही यह अरब दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित फिल्म समारोह बन जाएगा। इसकी वजह है फिल्मों की गुणवत्ता, मानवीय सरोकार, विचारों की आजादी और मार्केटिंग। बुशरा रोजा 2021 में अमिताभ बच्चन को सपरिवार आमंत्रित कर उनकी फिल्मों पर यहां एक विशेष कार्यक्रम करना चाहती हैं। मिस्र में अमिताभ बच्चन के प्रति पागलपन की हद तक दीवानगी है। मिस्र में दो चीजें सबसे महत्वपूर्ण हैं– गिजा के पिरामिड और नील नदी। लेकिन सिनेमा की दुनिया के लिए मिस्र की सबसे बड़ी देन है– ओमर शरीफ। 'लॉरेंस ऑफ अरेबिया' (1962) और 'डॉ. जिवागो' (1965) जैसी फिल्मों में मुख्य भूमिकाएं निभाने के कारण दुनिया भर में ओमर शरीफ को याद किया जाता है। अल गूना फिल्म फेस्टिवल ने उनके सम्मान में अरब के युवा अभिनेताओं के लिए ओमर शरीफ अवॉर्ड शुरू किया है।

अल गूना फिल्म फेस्टिवल शुरू होने के बाद अरब सिनेमा को दुनिया के बड़े फिल्म समारोहों में जगह मिलने लगी है और यहां दिखाई गई अधिकतर फिल्में अफ्रीकी और यूरोपीय सिनेमा घरों में प्रदर्शित हो रही हैं। दुबई, अबू धाबी, और दोहा ट्रिबेका फिल्म समारोहों के बंद होने और दूसरे फिल्म समारोहों के निस्तेज हो जाने के बाद अल गूना फिल्म फेस्टिवल का महत्व और बढ़ गया है। इसी वजह से इसे अमेरिका के साथ फ्रांस, इटली, स्विट्जरलैंड, यूएई और यूरोप के बहुत सारे देश समर्थन और भारी मदद दे रहे हैं। मिस्र के मोहम्मद दियाब (क्लेश), लेबनान की नडाइन लबाकी (केपरनॉम) और फिलिस्तीन के एलिया सुलेमान (इट मस्ट बी हैवेन) जैसे अरब फिल्मकारों को कान फिल्म फेस्टिवल में महत्वपूर्ण पुरस्कार मिलने शुरू हुए हैं। शरणार्थी समस्या, राजनीतिक अस्थिरता, स्त्री सशक्तीकरण और दूसरे मानवीय विषयों पर अरब सिनेमा में नई पहल देखी जा रही है।

सूडोकु नवताल-5530

सरल

3	9				1			
5	4			6	8		1	3
		1		7		9	5	
	8	9		5	3		4	7
6	1		4	9		2	3	
	3	4		1		8		
7	5		8	3			2	4
			6				7	9

Jagrutidaur.com, Bangalore

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5529 का हल

9	6	2	3	4	1	7	5	8
1	4	8	9	7	5	6	2	3
5	7	3	2	6	8	1	4	9
3	2	1	6	9	4	8	7	5
4	8	7	5	1	2	9	3	6
6	9	5	8	3	7	4	1	2
8	3	4	7	2	6	5	9	1
2	1	6	4	5	9	3	8	7
7	5	9	1	8	3	2	6	4

अपना ब्लॉग

कला की दुनिया

मोहन। लेबनान की राजधानी बेरूत में एक मसीहाई कलाकार जेफ्री कोडेफ्रोई सीरिया के युद्ध से भागकर आए एक शरणार्थी नौजवान साम अली की नंगी पीठ पर ही शेनजेन वीजा के चित्र बनाकर उसे सशरीर प्रदर्शनी में बिठा देता है। अब तक कैनवास और दीवारों पर ही पेंटिंग्स बनाने का रिवाज रहा है। सीरिया का वह नौजवान साम अली बेरूत में बिना वैध कागजात के शरणार्थी है और अपनी प्रेमिका अबीर के पास ब्रसेल्स जाना चाहता है। इन दोनों के बीच हुआ समझौता कला की दुनिया में खलबली मचा देता है। एक लाचार शरणार्थी की जहालत भरी जिंदगी जी रहा साम अली अब एक ऐसी अंतरराष्ट्रीय कला कृति में बदल चुका है जो कहीं भी आजादी से बिना वीजा पासपोर्ट आ–जा सकता है। 23 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक चले चौथे अल गूना फिल्म फेस्टिवल की शुरुआत ट्यूनीशिया की महिला फिल्मकार कौथर बेन हनिया की फिल्म 'द मैन हू सोल्ड हिज स्किन' से हुई।